क्यों आज छलकता जीवन मधु, इन खाली टूटे प्यालों में ३५
पूछती मंझधार कवि से पार कितनी दूर ? ३७
'बिटिया', दुख का अन्त हो गया ३८
स्वप्न की परियाँ उतरतीं आज बूँदों पर ३९
अनजाने आँखों में बिंधकर ४०
सुनहान रात, गुपचुप तारे, एकान्त चन्द्र, नभ मूक आप ४३
यह नभ मेरा आलोक-दीप ५०
जीवन का पावन दीप लिये आया हूँ जिसमें लघु प्रकाश ५४
आज सपने भी न अपने मैं अकेला कौन साथी ! ५८
आज तुम भी जा रहे हो कर मुझे कंगाल ६५
वर्ष, मास, दिन, घड़ी, विपल, पल, जो साँसों के साथ चला ६७
मैं चलता, मेरे साथ नया जीवन चलता है ७०
मणि मंगलमय विजय करो ७३
वीणा वादिनि हे ! ७४
वन्दन गीत बनें ७५
रक्त-लिप्त, विष-दग्ध धरा को नव जीवन, नव प्राण चाहिये ७६
जाग उठा हूँ—जाग उठा हूँ ७८
जर्जर जीवन बना कल्पना फिर भी रही हरी ७९
नया रूप आया, नया रंग आया ८०
मुझे तुम्हारा बन्धन भी प्रिय ८१
अनुपल वृद्ध जीवनोदधि के ८२
मैं देख रहा हूँ परिवर्तन ८९
महास्वप्न में कल्पना जागती है ९१
समय के सभी साथ जीवन बदल ते ९३
हार का अगला कदम ही जीत बन जाता ९४
भूल के इतिहास में है लक्ष्य को पाना ९५
प्राण प्रकाश करे ९७
चलो बढ़ो, बढ़े चलो, मनुष्य है बुला रहा ९८
विवश, रुद्ध ये प्राण, प्राण दो प्राण नये ९९
जीवन में सबसे अधिक बार 'मैं' का उपयोग किया मैंने १००
प्रलय में, तिमिर में, न तूफान में भी १०४
मैं पंथी, पृथ्वी सागर का लक्ष्य यहाँ मंझधार नहीं १०८
ये तूफानी चरण जवानी के १११
शेष क्या पाना रहा पाकर तुम्हें ११३
मैं तुम्हीं में मिलूँ, मेरे गीत तुमको पायें ११५
आज हम स्वतन्त्र हैं ११६
स्वतन्त्रता मिली, मिला नवीन ज्ञान है १२१
नौ बजते-बजते चल देता १२४
उस दिन साँझ को चार तारीख थी १३१
ऊपर घिरा हुआ नीलम का १३७
नर में ही सुरत्व पलता है १४३
मांसल प्राण मृत्यु के साथी, मुझे वज्र के प्राण चाहिये १४४
कितनी कमजोरी है जीवन में १४६
कैसा यह सूना है १४७
इतिहास आँसू के, इतिहास युद्ध के १४८
पहिये की धुरी पर मक्खी एक बैठ कर १५०
ये पचास वर्ष काल-व्याल के प्रबुद्ध श्वास १५१
साँपों के घोंसले से मणि-सा उजाला यह १५९
जय देवि, जय देवि १६१
हे भविष्य के अतिथि १६४
हे नव मानव, हे ज्योति पुंज ! १६६